



**“और हमने मनुष्य को अपने माता-पिता के प्रतिकर्तव्यनष्टि और दयालु होने का आदेश दिया है”  
(कुरआन 46:15)**

## **माता-पिता महत्वपूर्ण क्यों हैं?**

इस्लाम में माता-पिता के प्रति दयालु होना अल्लाह और उसके दूत की आज्ञाकारिता माना जाता है, और इसके लिए परलोक में पुरस्कृत किया जाएगा। उनका सम्मान करना और उनका पालन करना उनके द्वारा किए गए बलदानों और आपके पालन-पोषण में उनके द्वारा की गई देखभाल के लिए उनके प्रतिकृतज्ञता दिखाने का एक तरीका है। उनका सम्मान करना और उनका सत्कार करना मतिरता और प्यार को बढ़ाता है, जो अब पहले से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्हें लग सकता है कि आपने उन्हें अपनी नई जीवन शैली में अस्वीकार कर दिया है। याद रखें कि अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना और उनका सम्मान करना स्वर्ग में प्रवेश करने का एक साधन है, और अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना ईश्वर की इच्छा से आपके अपने बच्चों के लिए आपके साथ अच्छा व्यवहार करने का कारण होगा।

आप उनके प्रति दयालु कैसे हो सकते हैं? उनकी आज्ञा का पालन करो, उनका सम्मान करो, उनके सामने अपनी आवाज नीची रखो, मुस्कुराओ, वनिम्र बनो, उनके प्रति अपनी नाराजगी मत दिखाओ, उनकी सेवा करो, उनकी इच्छाओं को पूरा करो, उनसे परामर्श करो, उनकी बात सुनो और उनके प्रति जद्दी मत बनो। साथ ही, उनसे मिलने जाओ, उनके साथ समय बतियाओ, उन्हें उपहार दो, जब आप छोटे थे तब आपका पालन-पोषण करने के लिए उनका धन्यवाद करो। सबसे बढ़कर, उनके मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करो।

हालांकि, उनकी आज्ञा का पालन करने की सीमाएं हैं। अल्लाह कहता है:

**“और यदि वे दोनों दबाव डालें तुमपर कि तुम साझी बनाओ मेरा उसे, जिसका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं, तो न मानो उन दोनों की बात और उनके साथ रहो संसार में सुचारु रूप से” (कुरआन 31:14-15)**

माता-पिता की बात नहीं माननी चाहिए यदि वे आपसे अल्लाह या उसके दूत की अवज्ञा करने और इस्लामी शिक्षाओं का उल्लंघन करने के लिए कहते हैं। यदि आप किसी ऐसी स्थिति का सामना कर रहे हैं जिसमें आप किसी ऐसी चीज़ में शामिल होना हैं जिसकी इस्लाम में अनुमति नहीं है, तो ऐसा न करने का प्रयास करें। यदि वे रात के खाने में हैम (सुअर के पैर के ऊपरी भाग से मांस) दें, तो उन्हें यह बताये कि आपका ये खाने का मन नहीं है। सभी मामलों में, यथासंभव उन्हें ठेस न पहुंचाने का प्रयास करें।

जब आपको लगे कसिमय सही है और आप इस्लाम को अपनाने के बारे में अपने माता-पति से बात करना चाहते हैं, तो उन्हें धन्यवाद देने के साधन खोजें, खासकर अतीत की यादें। उन्हें बताएं कि आप कतिने शरारती बच्चे रहे होंगे, और उन्हें इस तरह परेशान करने के लिए आपको कतिना बुरा लगता है। उन्हें स्पष्ट रूप से समझाएं कि आपने इस्लाम को क्यों चुना। उन्हें बताएं कि उनके साथ आपका रश्िता बरकरार है।

ध्यान रखें कि माता-पति या किसी अन्य के साथ 'मेरा धर्म बनाम तुम्हारा धर्म' की धार्मिक बहस में न पड़ें। यदि वे आपको 'आंकते' हैं या आपका अपमान करते हैं, या 'इस्लाम वरिधी' भावनाओं को व्यक्त करते हैं, तो मुस्लिम होने के आपके निर्णय के लिए शर्मदा या अपमानति महसूस न करें। धैर्य के 'उपहार' को याद रखें और उसे जाने दें। ऊपर वर्णति प्रार्थनाओं से शक्ति प्राप्त करें।

यदि वे अपनी आशंका या डर व्यक्त करते हैं, तो उन्हें इस आधार पर संबोधति करें कि आप अब तक इस्लाम के बारे में क्या जानते हैं। उन सवालो का जवाब देने से बचें जिनके उत्तर आपके पास नहीं हैं। महसूस करें कि आप अभी भी अपना धर्म सीख रहे हैं। उन्हें 'धर्मांतरति' करने की कोशिश न करें या साबति न करें कि आप सही हैं और वे गलत हैं। इस्लाम या आपके इस्लाम अपनाने के बारे में उनके जो भी डर हैं उसको दूर करने के लिए जतिना संभव हो उतना प्रयास करें। किसी भी बातचीत को यह बताकर समाप्त करना अच्छा है कि आप उनसे प्यार करते हैं और उनके लिए प्रार्थना करेंगे। उनके सुनने के लिए कुछ अच्छे उपहार देना भी अच्छा होगा और मुस्लिम उदारता का एक उदाहरण होगा, जनिमें से कोई भी उन्हें स्वयं धर्मांतरण पर वचिर करने के लिए प्रेरति कर सकता है। उनके साथ अच्छा व्यवहार करने से उन्हें लगेगा कि आप उनके सबसे अच्छे परिचिति हैं, और यह कि आप अच्छे हैं ईमानदारी से और उनके लिए अच्छा चाहते हैं।

याद रखें बदलाव धीरे-धीरे आता है। कुछ लंबे समय तक अप्रभावति रहते हैं, और अधिकांश आपके धर्मांतरण के कारण संबंधो में हुए तनाव को ठीक कर लेंगे। कुछ ईश्वरीय मार्गदर्शन से आपके साथ जुड़ जाएंगे। आपका रश्िता समय के साथ वकिसति होगा। यह आप पर निर्भर करता है। कथनी की तुलना में करनी ज्यादा असरदार होती है। आपके साथ उनके रश्िते में उन्हें आशावाद, दृढ़ता और हर्षति गर्मजोशी देखने दें। यहां पैगंबर मुहम्मद के साथियों में से एक की एक सुंदर कहानी है। अब् हुरैरा ने कहा:

“मैं अपनी मां को तब इस्लाम में आमंत्रति करता था जब वह एक बहुदेववादी थी। एक दनि मैंने उन्हें इस्लाम में आमंत्रति कयिा और उन्होंने अल्लाह के दूत के बारे में कुछ ऐसा कहा जिससे मैं परेशान हो गया। मैं रोते हुए अल्लाह के दूत के पास गया और कहा: 'अल्लाह के दूत, मैं अपनी मां को इस्लाम में आमंत्रति कर रहा था और वो मना कर रही थी। आज मैंने उन्हें आमंत्रति कयिा और उन्होंने आपके

बारे में कुछ ऐसा कहा जिससे मैं परेशान हो गया। अबू हुरैरा की मां का मार्गदर्शन करने के लिए अल्लाह से प्रार्थना करें।' तो अल्लाह के दूत ने कहा: "ऐ अल्लाह, अबू हुरैरा की मां का मार्गदर्शन करें।"

मैं पैगंबर की प्रार्थना के कारण आशान्वति होकर चला आया। जब मैं घर पहुंचा तो देखा कि दरवाजा खुला था। मेरी मां ने मेरे कदमों की आवाज सुनी और कहा, 'अबू हुरैरा तुम जहां हो वहीं रहो!' मैं वहां पानी की आवाज सुन सकता था। उन्होंने खुद को साफ किया, कपड़े पहने और अपने सरि को ढक लिया। फिर उन्होंने दरवाजा खोला और कहा, 'ऐ अबू हुरैरा, मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह के सिवा कोई पूजा के लायक नहीं है, और मैं गवाही देती हूं कि मुहम्मद उसका दास और दूत है।'

मैं खुशी से रोते हुए अल्लाह के दूत के पास वापस गया, और कहा, 'अल्लाह के दूत, खुशखबरी! अल्लाह ने आपकी प्रार्थना का उत्तर दिया है और अबू हुरैरा की मां का मार्गदर्शन किया है।' उन्होंने अल्लाह की स्तुति और धन्यवाद किया, और कहा, 'यह अच्छा है।' मैंने कहा, 'अल्लाह के दूत, अल्लाह से प्रार्थना करो कि मेरी मां और मुझे अपने आसक्तिकि गुलामों के बीच प्रिय बना दे और उन्हें हमारे बीच प्रिय बना दे।' अल्लाह के दूत ने कहा, 'ऐ अल्लाह, इस दास को और इसकी मां को अपने आसक्तिकि दासों के नजदीक प्रिय बनाओ, और आसक्तिकों को इनके नजदीक प्रिय बनाओ।' ऐसा कोई आसक्तिकि नहीं है जो मुझे सुनता या देखता हो, परन्तु वह मुझ से प्रेम रखता है।" (सहीह अल बुखारी)

## वभिन्न हदीसें

मैं पैगंबर के कुछ सुंदर कथनों के साथ समाप्त करूंगा जो आपको वास्तविकि जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए आध्यात्मिकि रूप से बहादुर बना देगा।

पैगंबर ने अपने साथियों को दृढ़ रहने में प्रोत्साहति करने के लिए स्वर्ग का उपयोग किया। अल्लाह के दूत यासरि, उनकी पत्नी और उनके बेटे अम्मार के पास से गुजरे, जब उन्हें मक्का के अन्यजातियों द्वारा यातना दी जा रही थी और कहा:

**"धैर्य, यासरि का परिवार, धैर्य, यासरि का परिवार, आपकी मंजलि स्वर्ग है।" (अल-हकीम)**

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने कहा:

“अगली दुनिया की तुलना में यह दुनिया समुद्र में अपनी उंगली डालने और उस पर वापस आने वाले पानी को देखने जैसा है।” (सहीह मुस्लमि)

पैगंबर कहते थे:

“ऐ अल्लाह, अगली दुनिया के जीवन के अलावा कोई जीवन नहीं है।” (सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लमि)

अल्लाह के दूत ने कहा:

“नर्क के वासियों में से एक जो इस दुनिया में सबसे धनी व्यक्ति था, उसे न्याय के दिन लाया जाएगा और एक बार स्वर्ग में डुबकी लगा के पूछा जायेगा, 'आदम के पुत्र! क्या तेरे साथ कभी कुछ अच्छा हुआ? क्या तूने कभी किसी ईश्वरकृपा का अनुभव किया?' वह कहेगा, 'अल्लाह की कसम, नहीं, मेरे रब'। स्वर्ग वासियों में से एक और जो इस दुनिया में सबसे दुखी व्यक्ति था, उसे लाया जाएगा और स्वर्ग में डुबोया जाएगा और फिर पूछा जाएगा, 'आदम के पुत्र! क्या तूने कभी किसी दुख का अनुभव किया? क्या तूने कभी किसी कठिनाई का सामना किया?' वह कहेगा, 'अल्लाह की कसम, नहीं। मैंने कभी किसी दुख का अनुभव नहीं किया और मैंने कभी कोई कठिनाई नहीं झेली।'” (सहीह मुस्लमि)

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/22>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।